संतोषी माता की आरती

जय सन्तोषी माता जय सन्तोषी माता |
अपने सेवक जन को सुख सम्पति दाता || जय ..... || १ ||
सुन्दर चीर सुनहरी माँ धारण कीन्हों |
हीरा पन्ना दमके तन सिंगार लीन्हों || जय ..... || २ ||
गेरु लाल जटा छवि बदन कमल सोहे |
मन्द हसत करुणामयी त्रिभुवन मन मोहै || जय ..... || ३ ||
स्वर्ण सिंहासन बैठी चँवर ढुरे प्यारे |
धूप दीप मधु मेवा भोग धरे न्यारे || जय ..... || ४ ||
गुड़ और चना परम प्रिय तामे संतोष कियो |
सन्तोषी कहलाई भक्तन विभव दियो || जय ..... || ५ ||
शुक्रवार प्रिय मानत आज दिवस सोही |
भक्त मण्डली छाई कथा सुनत मोही || जय ..... || ६ ||
मन्दिर जगमग ज्योति मंगल ध्वनि छाई |
विनय करे हम बालक चरनन सिर नाई || जय ..... || ७ ||
भक्ति भाव मय पूजा अंगी कृत कीजै |
जो मन बनै हमारे इच्छा फल दीजै || जय ..... || ८ ||
दु:खी दरिद्री रोगी संकट मुक्त किये |
बहु धन धान्य भरे घर सुख सौभाग्य दिए || जय ..... || ९ ||
ध्यान धरो जाने तेरौ मनवांछित फल पायौ |
पूजा कथा श्रवण कर उर आनन्द आयौ || जय ..... || १० ||
शरण गहे की लज्जा राख्यो जगदम्बे |
संकट तूही निवारे, दयामयी अम्बे || जय ..... || ११ ||
संतोषी माँ की आरती जो कोई जन गावै |
ऋषि सिद्धि सुख संपत्ति जी भर के पावै || जय ..... || १२ ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

www.viswakalyanam.org